महाप्रभु जगन्नाथ की रथयात्रा:2020

भारत के चार धामों में अन्यतम धाम पुरी धाम ही है जहां पर भगवान जगन्नाथ भगवान साक्षात अपने पतितपावन विग्रह रुप में विराजमान हैं।वहां पर वे प्रतिदिन 56 प्रकार के अन्न का भोग ग्रहण करते हैं। पुरी धाम को मर्त्य बैकुण्ठ कहा जाता है,जहां के श्रीमंदिर के रत्नवेदी पर ये अपने बड़े भाई बलभद्र एवं छोटी बहन सुभद्रा के साथ पूरे विश्व को शांति,मैत्री,एकता,विश्व बंधुत्व के साथ–साथ भद्रता का पावन संदेश देते हैं।भगवान जगन्नाथ ओड़िया संस्कृति के प्राण हैं जो साल के 12 महीनों में कुल 13 यात्राएं करते हैं जिनमें उनकी सबसे पावन यात्रा होती है उनकी विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा। यह रथयात्रा अपने आपमें एक सांस्कृतिक महोत्सव है,जिसमें जाति,धर्म,भाषा,प्रान्त और लिंग का कोई भेदभाव नहीं होता है।लगभग एक हजार सालों से पुरी धाम में आषाढ़ शुक्ल द्वितीया के दिन रथयात्रा निकाली जाती है। प्रतिवर्ष तीन नए रथ बनाए जाते हैं।उन रथों पर अलग–अलग पार्श्व देव–देवियों को नये तरीके से सुसज्जितकर लगाया जाता है। तीनों रथों को तोरण–पताकाओं से अति मोहक बनाया जाता है। रथयात्रा के एक दिन पूर्व तीनों रथों को श्रीमंदिर के सिंहद्वार के ठीक सामने लाकर बड़दाण्ड पर खड़ा कर दिया जाता है।दूसरे दिन अर्थात रथयात्रा के दिन श्रीमंदिर के रत्नवेदी से चतुर्धा देव विग्रहों को पहण्डी विजय के साथ देवविग्रहों को उनके अपने–अपने रथों पर आरुढ़ कराया जाता है। पुरी के नरेश/गजपति जो भगवान जगन्नाथजी के प्रथम सेवक माने जाते हैं,उनके द्वारा तीनों रथों का छेरापहंरा का पवित्र कार्य संपन्न होता है। तीनों रथों के साथ उनके अपने–अपने घोड़ों को जोड़ा जाता है और जगन्नाथ भक्तों द्वारा रथों को खींचकर गुण्डीचा मंदिर लाया जाता है,जहां पर ये देव विग्रहगण सात दिनों तक विश्राम करते हैं। गुण्डीचा मंदिर श्रीमंदिर से लगभग तीन किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है। 2020 की रथयात्रा 23जून को है जो वैश्विक कोरोना महामारी के संक्रमण को ध्यान में रखकर एतियात के रुप में उसे कुल लगभग पांच हजार श्रीमंदिर के सेवायतगण था तथा लगभग पांच हजार पुलिसकर्मी ही तीनों रथों को खींचकर गुण्डीचा मंदिर तक लाएंगे। कहने के लिए रथयात्रा मात्र एक दिन की ही यात्रा होती है लेकिन उसके आयोजन में कुल लगभग दो महीने लगते हैं। इन दो महीनों में जितने भी वैष्णव,शैव,साक्त,सौर्य,जैन,बौद्ध और गाणपत्य भक्तगण आदि हैं सबों को किसी न किसी तरह भगवान उनकी आस्था और विश्वास के रुप में उन्हें रथयात्रा के दिन दर्शन देते हैं। इस वर्ष 23जून को विश्व के समस्त जगन्नाथ भक्तगण पहली बार अपने–अपने घरों से टेलीविजन तथा डीडी नेशनल आदि के माध्यम से ही देखेंगे। पुरी धाम को धर्मकानन कहा गया है जहां पर लगभग 172 अलग अलग मठ, अलग–अलग धर्मों तथा संप्रदायों के लिए हैं जो यह मानते हैं कि जगन्नाथ तत्व,जगन्नाथ संस्कृति वास्तव में भारतीय संस्कृति के ही पर्याय हैं। कहते हैं–''हरि अनंत,हरि कथा अनंता''–गोस्वामी तुलसीदास की प्रमुख चौपाई का यह संदेश भगवान जगन्नाथ के नर और नारायण दोनों रुपों को स्पष्ट करता है जिसमें वे अपने नर और नारायण दोनों रुपों में अपने भक्तों के लिए आदर्श होते हैं। भगवान जगन्नाथ हर दिन एक साधारण मानव की तरह सोते, जागते, श्रृंगार करते हैं,अपना मनबहलाव करते हैं तथा ओडिशी/गीतगोविंद के मधुर संगीत सुनकर शयन भी करते हैं।अपने परिवारवालों के साथ वे केवल रहते ही नहीं अपितु नर रुप में आनंदमय जीवन भी व्यातीत करते हैं।जब उनकी इच्छा होती है तब अनेकानेक यात्राएं भी करते हैं। भगवान जगन्नाथ के संयुक्त परिवार में उनके रत्न सिंहासन पर उनके बड़े भाई बलभद्रजी और उनकी मुंहबोली छोटी बहन सुभद्राजी के

साथ–साथ भू देवी, श्री देवी और सुदर्शनजी का विराजमान होना एक शाश्वत संयुक्त परिवार की अवधारण को स्पष्ट करता है।वैश्विक महामारी कोरोना के संक्रमण को ध्यान में रखकर ओडिशा सरकार तथा श्रीमंदिर प्रशासन पुरी ने एहतियात के रुप में 23जून को रथयात्रा के दिन बड़दाण्ड पर 144 धारा लागू कर दी गई है जिसके परिणामस्वरुप भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा2020 इस वर्ष बिना भक्तों के ही अनुष्ठित होगी।2020 रथयात्रा से जुडे विभिन्न आयोजनों की सुनिश्चित तिथियां निम्न प्रकार हैं–वसंतपंचमी–30 जनवरी,2020 के दिन से रथ निर्माण के लिए काष्ठ संग्रह का पवित्र कार्य आरंभ हुआ। अक्षयतृतीय–26अप्रैल,2020 से रथ निर्माण तथा चंदनयात्रा आरंभ हुई। देवस्नानपूर्णिमा–05जून,2020 को अनुष्ठित हुई। रथयात्रा –23जून,2020 को है। बाहुड़ा यात्रा–01जुलाई,2020 को है। चतुर्धा देव विग्रहों का सोना वेश– 02जुलाई,2020को है। अधरपड़ा –03जुलाई,2020 को है तथा नीलाद्रि विजय– 04जुलाई,2020 को है।
प्रस्तुति : अशोक पाण्डेय